नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

'मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा एवं जेंडर के प्रश्न' पर

हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी उदघाटित

असमानता को समानता से टक्कर देनी होगी- प्रो. इलीना सेन

वर्धा, 29 मार्च 2016: मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा और जेंडर के प्रश्नों को सुलझाने के लिए इस क्षेत्र में व्याप्त असमानता को समानता में परिवर्तीत करने के लिए संघर्ष करना होगा। आर्थिक

उन्नति के लिए पर्यावरण की हानी और जमीन का दोहन रोकने के लिए विश्व के अनेक देशों में प्रतिरोध शुरू हुआ है और इस प्रतिरोध के पीछे समानता के लिए संघर्ष के साथ-साथ देशज संस्कृति

के अध्ययन का भी महत्वपूर्ण उद्देश है। मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा एवं जेंडर के प्रश्नों पर अध्ययन करने के लिए इस विषय को अकादमिक शक्ल देनी होगी। उक्ताशय के विचार मुंबई स्थित टाटा सामाजिक विज्ञान विज्ञान संस्थान मुंबई की प्रो. इलीना सेन ने व्यक्त किये। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में मध्य भारत में देशज संस्कृति, भाषा एवं जेंडर के प्रश्न विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन मंगलवार, 29 मार्च को किया गया, इस अवसर पर प्रो. इलीना सेन बतौर बीज वक्ता के रूप में बोल रही थी।

विश्वविद्यालय का स्त्री अध्ययन विभाग एवं भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी के उदघाटन समारोह की अध्यक्षता विवि के

महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी सामाजिक कार्य अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने की। हबीब तनवीर सभागार में आयोजित उदघाटन समारोह में मंच पर आई. आई. टी. हैदराबाद के प्रो. नंदकिशोर आचार्य, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. एल. कारूण्यकरा, स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी डॉ. सुप्रिया पाठक, सहायक प्रोफेसर तथा संगोष्ठी संयोजक डॉ. अवंतिका शुक्ला उपस्थित थी।

प्रो. नंदकिशोर आचार्य ने विषय का विस्तार करते हुए कहा कि मनुष्य की समानता और स्वतंत्रता आवश्यक है। भाषाओं को बचाने की आवश्यकता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा

नष्ट होने से समुदाय नष्ट होता है और उसकी संस्कृति की भी हानी होती है। देशज शब्द का

उल्लेख कर उन्होंने सुझाव दिया कि इसका पारिभाषिक शब्द खोजकर उसे अकादमिक रूप देना चाहिए। प्रो. एल. कारूण्यकरा ने इतिहास में मनुष्य की चार अवस्थाएं यथा शिकारी, किसानी, औद्योगिकीकरण और सॉफ्टवेअर का जिक्र करते हुए इन अवस्थाओं में जिस प्रकार अन्य समाज

आगे बढ़ गया वैसे आदिवासी समाज आगे नहीं बढ़ पाया। उन्हें आगे बढ़ाने का अवसर दिया जाना चाहिए।

अध्यक्षीय उदबोधन में प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि महात्मा गांधी ने हिंदी स्वराज में भी सभ्यता की बात की थी। आज सभ्यताओं का संमिश्रण हुआ है और वह होता रहेगा। उन्होंने माना कि आधुनिकता की अच्छाई का स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। धन्यवाद ज्ञापन में कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने आदिवासी समाज और उनसे जुड़े संस्मरण को याद करते हुए आदिवासी समाज पर प्रतिभा राय तथा गोपीनाथ महंती द्वारा लिखे गये उपन्यासों का जिक्र अपने वक्तव्य में किया।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत चरखा और खादी-माला से किया गया। स्त्री अध्ययन विभाग की प्रभारी डॉ. सुप्रिया पाठक ने स्वागत एवं प्रास्ताविक वक्तव्य दिया।

इस संगोष्ठी में भारतीय संदर्भ राज्य, देशजता एवं जेंडर के प्रश्न, देशजता के विभिन्न प्रश्न, विकास की राजनीति देशज प्रतिरोध एवं जेंडर, मध्य भारत की आदिवासी महिलाएं एवं वर्तमान चुनौतियां इन उप-विषयों पर विमर्श होगा। कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी संयोजक स्त्री अध्ययन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. अवंतिका शुक्ला ने किया। इस अवसर पर प्रो. देवराज, डॉ. अनिल पांडे, डॉ. शोभा पालीवाल, डॉ. अन्नपूर्णा सी., डॉ. अख्तर आलम, डॉ. चित्रा माली, डॉ. मिथिलेश कुमार, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, डॉ. शंभू जोशी, डॉ. शिवसिंह बघेल, डॉ. भरत महोदय, डॉ. सुधा भारद्वाज, डॉ. ममता सिंह, डॉ. हरप्रीत कौर, डॉ. उमाकांत चौबे, डॉ. शुभ्रा, डॉ. रवि कुमार, डॉ. अमित विश्वास, चरनजीत सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों से आए प्रतिनिधि, विवि के शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।